पद

→ रैदास

(1388-1518)

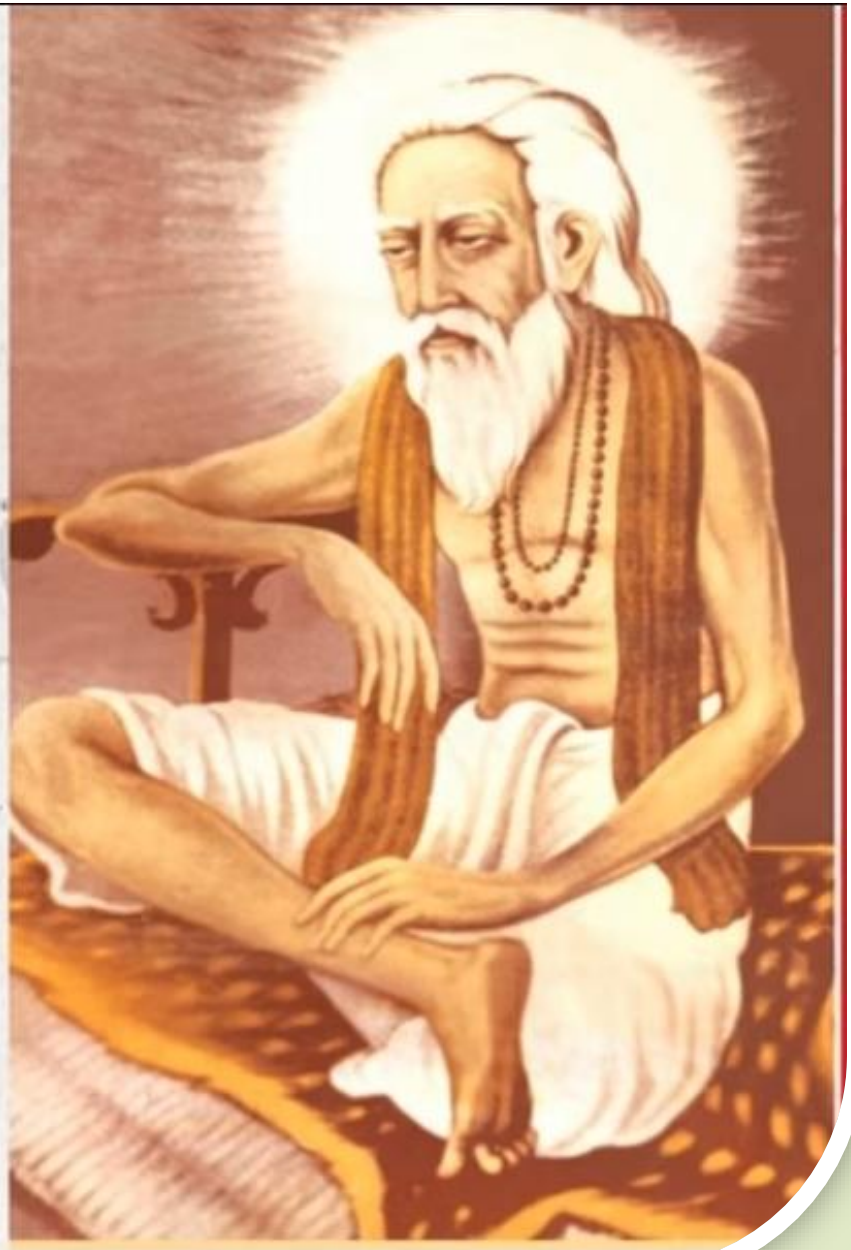

studyrank

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।
प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी,
जाकी अँग-अँग बास समानी।
प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा,
जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती,

जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभु जी, तुम मोती हम धागा,
जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।
प्रभु जी, तुम तुम स्वामी हम दासा,
ऐसी भक्ति करै रैदासा।

प्रभु	रैदास
चंदन	पानी
आकाश में छाए काले बादल	जंगल में नाचने वाला मोर
चन्द्रमा	चकोर पक्षी
दीपक	दीपक की बाती
मोती	पिरोया हुआ धागा
स्वामी	दास

studyrankers.com

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।

राम का नाम लेने की यह जो लत मुझे लगी हुई है, वह कभी भी नही छूटेगी। जिस किसी भी व्यक्ति विशेष का कोई अच्छा काम अथवा आचरण हमारे मन को भा जाता है, उसे हम हमेशा याद रखते हैं।जब अनसर मिलता है उसका अनुरूप आचरण व व्यवहार करने का प्रयास करते हैं।

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी।

हे मेरे प्रभु, तुम चंदन के समान हो और मैं पानी हूँ। चंदन के कण-कण में जो सुगंध होती है, उसके साथ रहने से मुझ जल में भी उसकी सुगंध बस गई है।

प्रभू जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।

हे मेरे आराध्य,तुम बरखा के पानी से भरे घने बादल हो और मैं मोर हूँ। इसलिए तो मै तुम्हारी ओर ठीक उसी तरह निहारता हूँ, जैसे चंद्रमा का प्रेमी चकोर पक्षी उसे निहारत रहता हा। भला यह कौन नहीं जानता कि मोर को नृत्य का, अपना हुनर दिखाने का, अपना प्रसन्नता व्यक्त करने का अवसर तभी मिलता है, तब आसमान घने बादलों से घिर जाता है।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोती बरै दिन राती।

हे मेरे अंतर्यामी, तुम दीपक हो और मैं उसमें लगी हुई बाती हूँ। वह तुम्ही हो जो मुझमें रात-दिन प्रकाश बनकर उजियारा कर रहे हो।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहि मिलता सुहागा।

हे तेजस्वी, तुम मोती हो तो मै धागा हूँ। मुझ धागे में तुम्हे पिरोया जाना मेरे लिए वैसे ही सौभाग्य की बात है, जैसे सोने के साथ सुहागे का मिलना, जो सोने की सही परख कराने में सहायक होता है।

प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा।

हे कृपानिधान तुम मालिक हो और मैं तुम्हारे नौकर के समान हूँ। जैसे कोई नौकर अपने मालिक की सेवा करता है, यह रैदास उसी तरह आप की भक्ति में लीन रहता है।ज्ञानार्जन सिद्ध करने के लिए प्रयत्नशील रहता हूँ।

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।
गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छत्रु धरै॥
जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै।
नीचउ ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै॥
नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै।
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै॥

studyrankers.com

ऐसी लाली तुझ बिन कउन करै

हे मेरे स्वामी, ऐसा तुम्हारे अलावा और कौन कर सकता है

गरीब निवाजू, गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै।

दीन दुखियों पर दया करने वाला मेरा ईश्वर मस्तक पर स्वामी होने का मुकुट धारण करता है। अज्ञानियों को ज्ञान देनेवाले मेरे गुरुवर के मस्तक पर ज्ञान का तेज झलकता है, अर्थात उन्हे भी अभिमान से भर देता है।

जाकी छोती (छुआछूत) जगत कउ लागै ता पर तूहीं ढरै (द्रवित होना)।

संसारी लोग जिन से छुआछूत (***Untouchability***) का व्यवहार करते हैं, तू उनके प्रति भी द्रवित होता है। जिन्हे अज्ञानी मानकर लोग उपेक्षित करते हैं, तू उन्हे भी ज्ञान का दान देता है।

नीचहू ऊच करै, मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै।।

मेरा गोविंद किसी से नहीं डरता, वह नीच को भी ऊँचे आसन पर विराजमान कर देता है। मेरा गुरू कोइ भेद-भाव नहीं करता, वह सबको समान भाव से देखता है।

नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै।

नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना, सैनु जो नीच कुल में जन्में समझे जाते थे वे भी अंततः महान माने गए। निम्न जाति के होकर भी प्रभु की कृपा से अमर हो गए।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै।।

कवि रैदास कहते हैं कि सुनो रे संतों ईश्वर साथ दे तो सब कुछ संभव है।
हे लोगों सुनो, किसी को नीच कुल का समझने वालों अगर गुरूजन से ज्ञान पाने का अवसर मिला तो निम्न जाति के लोग भी, उच्च कुलीन मेधावी के समान बनकर दिखा सकतें हैं।

रैदास ने प्रभु के कृपालु स्वभाव का वर्णन किया है।

जिन व्यक्तियों से सारी दुनिया अछूत मानती थी, वो आपकी दया से उच्च कोटि के ज्ञानियों में गिने जाते हैं।

इस प्रकार रैदास बताते हैं कि प्रभु बहुत कृपालु हैं।